संस्थापन कला का उद्‌भव एवं विकास : एक अध्ययन

डॉ० मनोज कुमार
ईमेल : manojgbss0@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० मनोज कुमार

संस्थापन कला का उद्‌भव एवं विकास : एक अध्ययन

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 2,
Article No. 18 pp. 132-138

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

समकालीन कला में कलाकारों ने अभिव्यक्ति के लिए कला की सीमाओं एवं बन्धन को तोड़ दिया है। इस समय कलाकार चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला के शास्त्रीय नियमों को त्यागकर कृतियों का निर्माण कर रहे हैं। हालॉकि इसकी शुरूआत प्रभाववाद से ही हो गयी थी। प्रभाववाद से पहले भी कुछ कलाकारों ने कृतियों को बनाकर बन्धनों से मुक्ति के लिये प्रयास किया है लेकिन क्रांन्तिकारी परिवर्तन प्रभाववाद की देन है। विश्व कला के इतिहास में प्रभाववाद से ही आधुनिकता (आधुनिक कला) की शुरूआत मानी जाती है। इस क्रम में आगे चलते हुये कला के इतिहास मे समकालीन शब्द आया। जहाँ आधुनिक कला परम्परागत रूप से चले आ रहे माध्यमों पर विचारों का सम्प्रेषण है। वहीं समकालीन कला वर्तमान में विज्ञान द्वारा की गयी खोज, भौतिक पदार्थ पंचतत्व (जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, आकाश) आदि का समावेश है। आधुनिकता से समकालीन कला की यात्रा में प्रविधि, प्रवृत्तियों एवं परिवेश का अप्रत्याशित बदलाव आया है।

मुख्य बिंदु

संस्थापन, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, अभिव्यक्ति, परम्परागत।

समकालीन कला में कैनवास पर भी डिजिटल काम हो रहे हैं समकालीन कला निरन्तर प्रयोगों का परिणाम है। समकालीन कला किसी भी नियमों की जरूरत नहीं समझती, इसका पूर्ण उद्देश्य केवल अभिव्यक्ति है। समकालीन कला, 'कला दीर्घाओं' की सीमा से आगे बढ़कर नदी का किनारा, पार्कों, सार्वजनिक स्थानों पर जगह बना चुकी है। यह कला तकनीक, माध्यम, सामग्री, आदि सभी का समावेश है। आधुनिक कला में हुये विचारों का परिवर्तनों और समकालीन कला में माध्यमों के परिवर्तनों के फलस्वरूप संस्थापन कला का नामकरण हुआ और यह कला शैली प्रकाश में आयी। ''संस्थापन कला यूरोप में सन् 1970 के दशक में प्रकाश में आयी।''[1]

हालॉकि इसके अंश स्वरूप कृतियों का निर्माण दादावाद से ही हो रही थी। भारत में संस्थापन कला 1990 के दशक लोकप्रिय हुई। संस्थापन कला, समस्त कला शैलियों, अभिव्यक्ति, माध्यम, तकनीक, विज्ञान, सौन्दर्य, आदि का समावेश है। वर्तमान में संस्थापन कला, यह कला का चरम सीमा है। जहाँ से आगे जाना सम्भव नहीं है, क्योंकि इस कला में प्रकृति एवं प्रकृति में मौजूद सभी तत्व तथा कषत्रिम खोज, उपयोगी, अनुपयोगी सामग्रियाँ, प्रकाश, साउण्ड आदि का विषयानुसार समावेश है। समकालीन संस्थापन कला मनुष्य द्वारा की जाने वाली अभिव्यक्ति है, लेकिन ईश्वरीय प्रदत्त संस्थापन को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं।

1. संस्थापन कला की परिभाषा

कलाकार सदैव से ही अपने समकालीन संस्कृति, समाज, सभ्यता को विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर अभिव्यक्त करता रहा है। ''संस्थापन कला एक विशेश स्थान के लिए है जो उस स्थान की विशेषताओं के अनुरूप निर्मित की जाती है। संस्थापन कला का अर्थ केवल एक वस्तु, एक मूर्तिशिल्प या एक वातावरण ही नहीं है बल्कि यह मिश्रित माध्यमों द्वारा रचित कलाकार के विचारों की अभिव्यक्ति है, जो कार्यस्थल, वस्तुओं एवं दर्शक के मध्य सम्बन्ध स्थापित करके, कला को नये परिप्रेक्ष्य में देखने एवं अनुभव करने का अवसर दर्शकों को प्रदान करती है।[2] संस्थापन कला में कलाकृति अवकाश, वातावरण का मिश्रित रूप है। विनोद भारद्वाज के अनुसार– ''संस्थापन कला में कलाकृतियों की प्रस्तुति का विशेष महत्व है। उसे एक सम्पूर्ण रचनात्मक कला कर्म के रूप में देखा जाता है। किसी दीर्घा या अन्य स्थान पर जब चित्रों, मूर्तिशिल्प आदि को एक खास तरह से रखा जाता है तो मोटे अर्थों में यह संस्थापन है।''[3] संस्थापन, स्थापन क्रिया का संज्ञात्मक रूप है। यह शब्द प्रदर्शन या प्रस्तुति के विचार का बोध कराता है। संस्थापन कला विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए संग्रहालयों एवं विथिकाओं का सहारा लेकर प्रकट हुयी है। इस कला में अन्तराल वातावरण, कृतियों का संगम है, इसमें दर्शक, कलाकार जब संस्थापन कला का दर्शन एवं अनुभव करने के लिये प्रवेश करता है तो इसका अभिन्न अंग बन जाता है। संस्थापन कला अद्भुत समागम, विचारों, इच्छाओं और भावों को जागृत करने माध्यम है। रेखा श्रीवास्तव के अनुसार ''संस्थापन कला प्रदर्शनी स्थल को तीन आयामी कलाकृति के रूप में अभिव्यक्ति को कहते हैं। इस शैली में वस्तु से सम्बन्धित दिलचस्प एवं रोजमर्रा की वस्तुओं को एक स्थान पर संयोजित करके प्रदर्शित किया जाता है। कभी–कभी दर्शक भी कलाकृति का हिस्सा बन जाता है।''[4] संस्थापन कला का सशक्त स्वरूप चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला के मिश्रण एवं कलाकार के विचारों की अभिव्यक्ति है। इस कला में नये–नये दृष्टिकोण है जो सौन्दर्य एवं दर्शन को समाहित किये हुये हैं। संस्थापन कला, कला दीर्घाओं की दीवारों पर लगी अस्थायी वस्तुओं या तैयार वस्तुओ के प्रदर्शन पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय दर्शक के पूरे संवेदी अनुभव को स्वयं में सम्मिलित कर लेती है और यह प्रभाव कला और जीवन के बीच रेखाओं को भंग करता है। एलेन काप्रो के अनुसार ''अगर हम कला को छोड़कर स्वयं प्रकृति को ही एक नमूने या प्रस्थान बिंदु के रूप में ले तो हम कला

को साधारण जीवन के संवेदी पदार्थों को बाहर निकाल एक भिन्न एवं नया आविष्कार करने में समर्थ होंगे, जो संस्थापन कला है।''[5]

''सन् 1960 ई0 में संस्थापन शब्द का प्रयोग आर्ट फोरम और इण्टरनेशनल स्टूडियो आदि कला पत्रिकाओं ने उस विधा का वर्णन करने के लिये किया, जिसके अन्तर्गत प्रदर्शनी को उचित स्थान पर लगाया जाता था। प्रदर्शनी के इस प्रबन्ध के रूप प्रस्तुतिकरण को एक इंस्टालेशन शाट कहा जाता था।''[6] प्रारम्भ में संस्थापन शब्द से सांकेतिक अर्थ उत्पन्न होता था। संस्थापन शब्द सूचक का पर्यायवाची है, और इस शब्द का प्रयोग स्थानों पर स्थायी एवं अस्थायी कृतियों, स्थापत्य एवं वस्तुओं के प्रबन्धन के लिए किया जाता था। संस्थापन कला के नामकरण के कई वर्षों पूर्व से मौजूद है। ''संस्थापन कला का लिखित रूप में पहला प्रयोग 1969 में आक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में कला के सन्दर्भ में हुआ।''[7] संस्थापन कला ब्रह्माण्ड के निर्माण के साथ शुरू हो गया था। कृत्रिम रूप से इसका अस्तित्व प्रागैतिहासिक समय से है। 20वीं शताब्दी के मध्य इस तरह के कला कार्य को प्रोजेक्ट आर्ट, वातावरणीय कला, असेम्बलिंग आर्ट आदि नामों से परिभाशित किया गया। वर्तमान में कला के शब्द कोश में संस्थापन शब्द दृढ़ता से स्थापित हो चुका है। संस्थापन कला की तुलना जर्मन शब्द मे Gesamtkunstwerk से की जा सकती है। इस शब्द का प्रयोग सार्वभौमिक कलाकृति, विभिन्न कलाओं का संयोजन, व्यापक कला कार्य के लिये किया जाता है। बैजू प्रधान के अनुसार ''संस्थापन कला को अपने वास्तवीकरण के लिए और अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये खुद पर न सीमायें थोपने की जरूरत है न ही मर्यादायें। इस कला के सैद्धान्तिक किया जाता है। बैजू प्रधान के अनुसार ''संस्थापन कला को अपने वास्तवीकरण के लिए और अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये खुद पर न सीमायें थोपने की जरूरत है न ही मर्यादायें। इस कला के सैद्धान्तिक ढाँचे में शामिल हो जाने पर कोई भी चीज–ध्वनियों से लेकर दृश्यों और गंधों तक, भंगिमाओं और वस्तुओं तक, अनुपस्थितियों तक इसका हिस्सा बन सकती है।''[8] संस्थापन कला के विविधता के कारण परिभाषाओं में बॉधना कठिन प्रतीत होता है। कलाकार, कला समीक्षक, विद्वानों ने संस्थापन कला पर विचार व्यक्त करके समझाने की कोशिश की है। विवान सुन्दरम के अनुसार ''आप अलग–अलग तत्वों को एक अवकाश में ले आते हैं। अवकाश में विशय वस्तु और फार्म के कारण इन तत्वों का संयोजन एक सम्बन्ध में रूपान्तरित हो जाता है और अवकाश का एक अनुभव सामने आता है, एक अन्य अर्थ में दर्शक स्वयं कलाकृति का हिस्सा बन जाता है, वह संस्थापन के भीतर जा सकता है। संस्थापन का एक सम्बन्ध व सूत्र स्थापत्य से भी जुड़ा है।''[9] संस्थापन कला को पार्थिव शाह ने आम जन–जीवन से जोड़ा है। इनके अनुसार– ''संस्थापन कला का मतलब यह है कि आप कुछ संस्थापन कर रहे हैं और उसके लिये आप रास्ते के होने पर लगी दुकान से भगवान की एक मूर्ति चन्द रूपयों में खरीद लेते हैं लेकिन अभी वह महज आकृति ही है, भगवान नहीं। आप उस मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करते हैं और वह एक देवता या देवी में रूपान्तरित हो जाती है। दूसरे शब्दों में मेरी नजरों में प्राण प्रतिष्ठा ही संस्थापन है।''

संस्थापन कृतियाँ एव वस्तुओं का सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें स्थान, वातावरण के साथ कृतियों लाइट, साउण्ड आदि का संयोजन प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान करता है। संस्थान के प्रदर्शन में कलाकार एवं वीथिकायें अहम भूमिका निभाते हैं। संस्थापन कला स्थान विशेष को सक्रिय करने एवं वास्तविक प्रभाव को परिवर्तित करने का सामर्थ्य रखता है। संस्थापन कला प्रत्येक आयाम के समन्वय से भी व्यक्त किया जा सकता है। चित्रकला, मूर्तिकला के माध्यम से जो विचार प्रस्तुत करने में कठिनाई होती है उसे संस्थापन कला के माध्यम

से आसानी एवं प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुत की जाती है। संस्थापन कला में कलाकार माध्यम की विविधता एवं तत्वों के उपयोग के लिए स्वतन्त्र है। इसमें माध्यमों की स्वतन्त्रता से कृतियों के विविध स्वरूप का दर्शन होता है। यह कला कलाकार को स्टूडियों के बाहर निकाल जनमानस तक अपनी कला पहुँचाने का अवसर प्रदान करती है। संस्थापन कृतियों में प्रयुक्त वस्तुओं के द्वारा कलाकार क्या विचार रखता है, यह कलाकार की सोच के ऊपर निर्भर करता है। संस्थापन कला को देखने का नजरिया एवं परिभाशा समयानुसार बदलता रहा है। संस्थापन कला वातावरण में होने वाले परिवत्रनों को समाहित एवं विच्छेदित करने का सामर्थ्यशाली गुण रखता है। संस्थापन कला में कई कलाओं के मिश्रण एवं तत्वों की प्रधानता एवं अधिकता के कारण यह नाम दिया गया है। संस्थापन कला विचारों की सघनता है।

डॉ0 जयकृष्ण अग्रवाल के अनुसार ''संस्थापन कला जनमानस की कला है, जिसे कलाकार अपने विषयों अनुरूप निर्माण करता है। यह पूरी तरह कलाकारों के द्वारा निर्माण की गयी रचना है।[10] संस्थापन कला अति प्राचीन है। यह जनमानस के दिनचर्या में सम्मिलित है। वर्तमान समय में संस्थापन कलाकारों के कृतियों में विनोद भारद्वाज द्वारा निम्नलिखित विचारों के द्वारा संस्थापन कला को समझा जा सकता है– ''आज का आर्टिस्ट वही होगा जो अपनी संस्कृति पहचान की बुनियाद पर खड़ा है, वह अपनी बात कहेगा और उसकी बातें आने वाली कल की सोंच होगी।''[11]

संस्थापन कला का उद्भव

संस्थापन कला का उद्भव ब्राह्माण्ड के निर्माण के साथ ही शुरू हुआ। ब्राह्माण्ड सम्पूर्ण समय, अन्तरिक्ष और उसकी अंतर्वस्तु को कहते हैं। ब्राह्मण्ड में सभी ग्रह, तारे गैलेक्सियाँ, अपरमाणविक गुण और सारा पदार्थ, ऊर्जा, प्रकाा, अंधेरा आदि सम्मिलित हैं।[12] इसी ब्रह्माण्ड में पृथ्वी भी एक ग्रह है। विज्ञान या वैज्ञानिक खोजों से प्राप्त जानकारी के अनुसार पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ पर जीवन सम्भव है। इस पृथ्वी पर पंच तत्व (जल, वायु, अग्नि, धरा, आकाश) उचित तालमेल के साथ उपस्थित हैं जिसमें जीवों का जन्म एवं विकास सम्भव है।

इस पृथ्वी पर दो प्रकार का संस्थापन है। प्रथम प्राकृतिक संस्थापन द्वितीय कृत्रिम संस्थापन। प्राकृतिक संस्थापन के अन्तर्गत धरती, पहाड़, पत्थर, कंकड़, जल, नदियाँ, समुद्र, झील, झरने, जल में उपस्थित पेड़–पौधे, मछलियाँ, कछुआ, केकड़े, सरीसर्प धरती पर पाये जाने वाले मनुष्य, जानवर (पशु), पक्षी, पेड़–पौधे आदि के साथ चक्रवात, तूफान, आँधी, प्रकाश, आकाशीय बिजली प्राकृतिक बारिश इत्यादि है। संस्थापन सुबह–सुबह सूर्य का लालिमा के साथ निकलना और इसकी किरणों का पेड़ों–पौधों, नदियों, झरनों, समुद्रों, जानवरों, घास पर पडत्रे ओस की बूंदों पर पड़कर इनके शोभा, सौन्दर्य को बढ़ाना, रात के बाद सुबह थोड़ा ठण्ड का एहसास होना अथवा ठण्डी–ठण्डी हवा का शरीर के द्वारा एहसास होना, चिड़ियों का चहकना, नदियों में स्नान, पानी, पीना, पतझड़ का मौसम, बसन्त ऋतु की खूशबूमय एवं सौन्दर्यमयी वातावरण, गर्मी में तपती धरती, बादलों का चलना, हवाओं के साथ बारिश होना, नदियों द्वारा गुफाओं का निर्माण करना, बरसात में पेड़–पौधों का उगना एवं बढ़ना, छाया देना आदि के साथ मनुष्य द्वारा समय, मौसम, वातावरण के प्रभाव से आने वाले विचार, रंगीन पहाड़ों, रंगीन मिट्टियाँ। मनुष्यों द्वारा रहन–सहन, बोलचाल, सांस्कृतिक वातावरण की झलक इत्यादि सब का समन्वित रूप से संयोजन देखने का नजरिया संस्थापन कला को व्यक्त करता है।

कृत्रिम संस्थापन का सीधा आशय मनुष्य द्वारा की गयी रचना। यह रचना किसी भी प्रकार का हो इसमें कोई बन्धन नहीं है। मनुष्यों द्वारा किया गया प्रथम कार्य से ही कृत्रिम रूप से संस्थापन कला की शुरूआत हो

जाती है। संस्थापन कला मुख्य उद्‌देश्य चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला के साथ मनुष्य, पशु, पक्षी, पेंड़, पौधे, समय, प्रकाश, अंधेरा, अवकाश, ऊर्जा आदि के मध्य व्याप्त दूरी को मिटाना है। मनुष्यों (कलाकारों) ने भौतिक पदार्थों को परिवर्तित करके सौन्दर्यात्मक रचना के द्वारा जो माहौल या वातावरण उत्पन्न किया है, उसे संस्थापन कहा गया है।

संस्थापन कला की शुरूआत कला जगत के समीक्षक, आलोचक, विद्वान, लेखक आदि ने दादावाद से मानी है। क्योंकि इस वाद की कृतियाँ समकालीन संस्थापन कला से मेल खाती है। संस्थापन कला सम्बन्धी विचार सर्वप्रथम दादावादी कलाकारेां के कलात्मक विचारों से मिलता है। दादावादी कलाकार विश्वयुद्ध के द्वारा होने वाले विनाश से दुखी थे, जिसके परिणामस्वरूप दादावादी कलाकारों ने समाज में प्रचलित खोखले आदर्शों और परम्पराओं का विरोध के लिये कृतियों का निर्माण किया। इन कलाकारों ने अपने कृतियों के द्वारा मानव विकास, यान्त्रिक युग (जीवन) और सामाजिक शिष्टाचार के साथ कला एवं सौन्दर्य सम्बन्धी नियमों का उपहास उड़ाया है। ''प्रथम विश्वयुद्ध के समय मानव समाज में निराशा का वातावरण फैल गया था। पाश्चात्य समाज के विनाशक परिस्थितियों के कारण ही दादावाद का जन्म हुआ। दादावाद के कलाकारों ने परम्परागत एवं प्रचलित सभी सिद्धान्तों के विरोध में अपनी कृतियों का प्रदर्शन किया। जिसके पीछे पुराने विचारों एवं नीति नियमों को नष्ट करने के अतिरिक्त कोई ध्येय नहीं था।''[13] दादावादी कलाकार वस्तुओं, उपकरण, कलाकृतियों आदि को संयोजित करके प्रदर्शित करते थे। ''इनके प्रदर्शनी में पुराने बस टिकट, रस्सी के टुकड़े, पुरानी खराब घड़िया, लकडत्री के गुटके, टूटे बटन, पुराने चित्र, टूटी–फूटी चीजें वगैरह सब तरह के समान रखकर अनोखे नाम के शीर्षक दिये जाते थे।''[14] दादावाद के अतिरिक्त अतियथार्थवाद, संकलन कला, नवयथार्थवाद, पाप कला, मिनिमल आर्ट, काईनेटिक कला, प्रत्ययवाद, परफार्मेन्स आर्ट (अभिनय कला) आदि में संस्थापन शब्द का प्रथम बाद प्रयोग आर्ट फोरम और इण्टरनेशनल पत्रिका द्वारा किया गया। इस शब्द को 1969 ई0 में अंग्रेजी शब्दकोश आक्सफोर्ड में जगह मिला। इस समय तक संस्थापन कला यूरोप अथवा पाश्चात्य कला के इतिहास में अपनी जगह बना चुका था। कला के रूप में संस्थापन की शुरूआत बीसवीं शती के आरम्भिक दशकों में यूरोपीय देशों में हुयी थी, लेकिन इसकी लोकप्रियता 1970 के दशक में ही मिल सकी।''[15] समकालीन कला के विकास में पश्चिमी देशों के कलाकारों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। पश्चिमी देशों की आधुनिक कला नवीनीकरण से ओत प्रोत हैं जिसका प्रभाव पूर्वी देश भारत पर व्यापक रूप से पड़ा। जिसके परिणामस्वरूप भारत की समकालीन कला में संस्थापन कला का अभ्युदय हुआ। ''भारत की समकालीन कला में संस्थापन कला सन् 1990 के दशक में एक महत्वपूर्ण कला आंदोलन के रूप में सामने आयी है।''[16] संस्थापन कला एक विशेष स्थान के लिए उस स्थान के विशेषताओं के अनुरूप निर्मित की जाती है।

संस्थापन कला का विकास क्रम

संस्थापन कला का नामकरण करने में काफी वर्ष लगे। संस्थापन कला का मतलब ही है कि किसी भी वस्तु, माध्यम, तत्व, अवकाश, उर्जा, लाईट, साउण्ड का विषय के अनुरूप समावेश करके रचना करना। संस्थापन का विकास विभिन वादों के भिन्न–भिन्न चरणों में हुआ है। आधुनिक युग में राजनीति, साहित्य, दर्शन, धर्म, सामाजिक विमर्श के साथ कला में भी प्रयोग धर्मी प्रयोग हुये है। आधुनिक कला का प्रभाव विश्व के समस्त देशों पर पड़ा है इस समय विज्ञान के क्रान्तिकारी खोजों के कारण जनमानस के चेतना में बदलाव आया, जिसका प्रमाण कलाकारों की कृतियों में उपलब्ध है। जिस तरह से कला के क्षेत्र में तकनीक का विकास होकर बदलाव

हुआ, उसी तरह से कलाभिव्यक्ति के लिए माध्यम एवं उपकरण भी बदल गये है। ''समय–समय पर नई तकनीक नये प्रयोगों के साथ कला क्षेत्र में भी नई–नई दिशाएँ खुलती रही हैं। कला रूपों के तत्वों को, तकनीक के नवीनतम उपकरणों के प्रयोगों से मिलाकर भिन्न–भिन्न रूप निर्मित किये जा रहे हैं।''[17] यूरोपीय देशों की कलाओं में परिवर्तन एक विशेष गुण हैं पश्चिमी कला हमेशा से ही अनेक विचारधाराओं एवं अन्वेशण को समाहित करते हुये निरन्तर आगे बढ़ी है। कला के विकास में समाज, विज्ञान, दर्शन और तकनीक से काफी सहयोग प्राप्त हुआ है। कृतियों के माध्यम खनिज पदार्थों (मिट्टी, पत्थर आदि) से शुरू होकर वर्तमान में लेजर लाईट तक पहुँच गया है।

दादावाद संस्थापन कला के उद्भव का प्रमुख वाद है। इस वाद की कषतियाँ समकालीन संस्थापन कला से मेल खाती है। संस्थापन कला सम्बन्धी विचार सर्वप्रथम दादवादी कलाकारों के कलात्मक विचारों से मिलता है। जिसका प्रभाव संस्थापन कलाकृतियों में देखने को मिल रहा है। दादावादी कलाकार विश्वयुद्ध से होने वाले विनाश से दुःखी थे। जिसके परिणामस्वरूप दादावादी कलाकारों ने समाज में प्रचलित खोखले आदर्शों और परम्पराओं का विरोध के लिये कषतियों का निर्माण किया। कलाकारों ने अपनी कृतियों के द्वारा मानव विकास, यान्त्रिक युग और सामाजिक शिष्टाचार के साथ कला एवं सौन्दर्य सम्बन्धी नियमों का उपहास उड़ाया। ''प्रथम विश्व युद्ध के समय मानव समाज में निराशा का वातावरण फैल गया था। पाश्चात्य समाज के विनाशक परिस्थितियों के कारण ही दादावाद का जन्म हुआ। उन्होंने परम्परागत एवं प्रचलित सभी सिद्धांतों के विरोध में अपनी कृतियों का प्रदर्शन किया। जिसके पीछे पुराने विचारों को, नीति नियमों को नष्ट करने के अतिरिक्त कोई ध्येय नहीं था।''[18] दादावादी कलाकार वस्तुओं, उपकरण, कलाकृतियों को संयोजित करके प्रदर्शनी करती थे। ''इनके प्रदर्शनी में पुराने बस टिकट, रस्सी के टुकड़े, पुरानी खराब घड़ियाँ, लकड़ी के गुटके, टूटे बटन, पुराने चित्र, टूटी फूटी चीजें वगैरह सब तरह के रद्दी सामान रखकर अनोखे शीर्षक दिये जाते हैं।''[19] इस प्रकार के प्रयोगों से कला को यथार्थ जीवन के सच्चाई के द्वारा व्यक्त किया गया। दादावाद के प्रभावशाली कलाकार मार्सेल घुशां थे। मार्सेल घुंशा ने बनी बनायी वस्तुओं को प्रदर्शनी में अनोखे शीर्षक के नाम से प्रदर्शित किया। 'जिसमें मूत्र–पाट को सन् 1917 ई0 के प्रदर्शनी में 'फव्वारा' शीर्षक से प्रदर्शित किया।''[20]

संदर्भ ग्रन्थ

1. (2006). भारत की समकालीन कला, एक परिप्रेक्ष्य–प्राणनाथ मागों. प्रथम संस्करण. नेशनल बुल ट्रस्टः इण्डिया. पृष्ठ **126.**
2. देवी, डॉ0 रीना. (2016). भारत में संस्थापन कला के विकास में महिला कलाकारों का योगदान : एक अध्ययन. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय. शोध प्रबन्ध. पृष्ठ **21.**
3. भारद्वाज, विनोद. (2009). वृहद आधुनिक कला कोश. वाणी प्रकाशनः नई दिल्ली. द्वितीय संस्करण. पृष्ठ **244.**
4. श्रीवास्तव, रेखा. संस्थापन कला के अभिव्यक्ति के बदलते साधन. www.wikipedia.org.
5. http://en.wikipedia.org/wiki/installation/art.4.
6. http://kagnof.com/kagahlog/2008/12/07/20774.
7. http://csmtuchicago.edu/glossary2004/installation/htm.
8. (2010). कला भारतीय खण्ड–2. पीयूष दईया. ललित कला अकादमीः नई दिल्ली. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **506.**

9. वही. पृष्ठ **488.**
10. भारद्वाज, विनोद. (2009). वृहद आधुनिक कला कोश. वाणी प्रकाशनः नई दिल्ली. द्वितीय संस्करण. पृष्ठ **243.**
11. www.wikipedia.org/wiki/czak.M.
12. (2019). आधुनिक चित्रकला का इतिहास–र0वि0 साखलकर. हिन्दी ग्रन्थ अकादमीः जयपुर. 19वां संस्करण. पृष्ठ **226.**
13. वही. पृष्ठ **227.**
14. (2006). भारत की समकालीन कला, एक परिप्रेक्ष्य : प्राणनाथ मागों. नेशल बुक ट्रस्टः इण्डिया. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **126.**
15. देवी, डॉ0 रीना. (2016). भारत में संस्थापन कला के विकास में महिला कलाकारों का योगदान : एक अध्ययन. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय. शोध प्रबन्ध. पृष्ठ **24.**
16. जोशी, ज्योतिश. (2006). 'रूप ंकर' समकालीन कला विमर्श. यक्ष पब्लिकेशनः नई दिल्ली. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **14.**
17. साखलकर, र0वि0. (2010). आधुनिक चित्रकला का इतिहास. हिन्दी ग्रन्थ अकादमीः जयपुर. 19वां संस्करण. पृष्ठ **261.**
18. वही. पृष्ठ **226.**
19. www.take.org.uk.
20. Petry, Michael. (1944). Nicolas De Oliveira-Nocola Oxley. Indullation Art. Pg. **16.**